नाद-नर्तन ISSN: 2349-4654
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

कुमाऊँ में शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में डॉ. विजयकृष्ण की भूमिका

प्रियतोष कर्नाटक

शोधार्थी, एल.एस.एम परिसर, पिथौरागढ़,
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

डॉ. गंगा तमांग

शोध निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर,
एम.बी.पी.जी कॉलेज, हल्द्वानी, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

सार-संक्षेप

कुमाऊँ भारतवर्ष के उत्तराखंड राज्य का हिमालयी भूभाग है। जटिल भौगोलिक परिवेश एवं दुर्गम परिस्थितियों से घिरा होने के कारण यह क्षेत्र शास्त्रीय संगीत की बारीकियों से अनभिज्ञ रहा। ईश्वरीय प्रेरणा के फलस्वरूप अनेकों श्रेष्ठ संगीत साधकों ने इस देवभूमि में पदार्पण कर इसे अपनी कर्मस्थली बनाया तथा संगीत गायन एवं वादन की शिक्षा के माध्यम से अनेकों विद्यार्थियों को शास्त्रीय संगीत की बारीकियों से अवगत करा कर शास्त्रीय गायन एवं वादन के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। वर्तमान समय में कुमाऊँ शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करने में सफल होता जा रहा है। शास्त्रीय तबला वादन के क्षेत्र में भी नए कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। डॉ. विजयकृष्ण ने कुमाऊँ में शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे इस क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत की प्रतिभाओं को नया आयाम प्राप्त हुआ है और अनेकों स्थानीय कलाकारों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। इस शोध पत्र को प्रस्तुत करने का उद्देश्य शास्त्रीय तबला वादन के क्षेत्र में डॉ. विजयकृष्ण के योगदान को समझना तथा कुमाऊँ में शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना है। डॉ. विजयकृष्ण के प्रयासों से कुमाऊँ में शास्त्रीय तबला वादन के क्षेत्र में नई क्रांति आई तथा स्थानीय कलाकारों को नया आयाम प्राप्त हुआ। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया गया है। कुमाऊँ क्षेत्र के प्रसिद्ध संगीतज्ञों एवं कुशल तबला वादकों से संपर्क स्थापित कर साक्षात्कार पद्धति का सर्वाधिक प्रयोग किया गया है। डॉ. विजयकृष्ण ने अजराड़ा घराने के उस्ताद अजीजुद्दीन खाँ एवं हैदराबाद के उस्ताद शेख दाऊद के मार्गदर्शन में गुरु-शिष्य परम्परा के अंतर्गत तबला वादन की शिक्षा प्राप्त की। कुमाऊँ में शास्त्रीय संगीत के प्रति जागरूकता बढ़ाने, शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार तथा स्थानीय कलाकारों को नई दिशा प्रदान करने के क्षेत्र में डॉ. विजयकृष्ण की भूमिका उल्लेखनीय रही है। निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से समस्त पाठक कुमाऊँ में शास्त्रीय तबला वादन की प्राचीन एवं वर्तमान स्थिति से अवगत हो पायेंगे।

मुख्य शब्द : शास्त्रीय संगीत, तबला वादन, मानसखंड, लोक संगीत, लोक विधा, एकल वादन

शोध-पत्र

कुमाऊँ : संक्षिप्त परिचय – उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र को स्कन्दपुराण में मानसखंड कहा गया है। इस प्रकार मानसखंड उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र का पौराणिक नाम है। वर्तमान समय में उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र में नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, चम्पावत, बागेश्वर और उधमसिंहनगर छह जनपद सम्मिलित हैं। कुमाऊँ का क्षेत्र मंदिरों, तीर्थों, नदियों और प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण पर्वत श्रृंखलाओं के लिए विख्यात है। कुमाऊँ राज्य को कूर्मांचल नाम से भी सम्बोधित किया जाता था। कुमाऊँ के सुप्रसिद्ध पत्रकार हिमांशु जोशी के अनुसार – "हिमालय में भी मध्य हिमालय, मध्य हिमालय में भी कुमाऊँ अपनी लोक-परम्पराओं के लिए प्रख्यात रहा है। साहित्य, संस्कृति का भी यह सदैव गढ़ रहा है। अपने युग के प्रख्यात आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक विभूतियों के लिए प्रेरणा स्रोत भी।" (रौतेला 13)

प्रारम्भ में दुर्गम क्षेत्र होने के कारण उत्तराखंड का कुमाऊँ क्षेत्र मात्र लोक संगीत, रामलीला, बैठकी एवं खड़ी होली तक ही सीमित था। शास्त्रीय संगीत की सांगीतिक विधाओं से अछूता यह क्षेत्र वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत की गतिविधियों में उत्तरोत्तर अपनी सहभागिता की ओर उन्मुख होता चला जा रहा है। वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत की गतिविधियाँ इस दुर्गम क्षेत्र में लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं। इससे स्पष्ट

होता है कि कुमाऊँ में शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण अनवरत स्थापित होता चला जा रहा है।

कुमाऊँ में शास्त्रीय संगीत की प्राचीन स्थिति – आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व उत्तराखंड का कुमाऊँ क्षेत्र शास्त्रीय संगीत के वास्तविक रूप से प्रायः पूर्ण रूप से अनभिज्ञ था। इस अनभिज्ञता का कारण यहाँ की विषम भौगोलिक परिस्थिति थी। आवागमन के साधनों का पर्याप्त अभाव, विषम जलवायु, भौतिक संसाधनों की अनुपलब्धता ने इस क्षेत्र को शास्त्रीय संगीत की बारीकियों से अवगत होने का सुअवसर प्राप्त होने से वंचित रखा। यह सर्वविदित तथ्य है कि शास्त्रीय संगीत एक गुरुमुखी विद्या है। श्रेष्ठ गुरुजनों की अनुपलब्धता इस क्षेत्र को शास्त्रीय संगीत के वास्तविक रूप से अवगत न करा सकी और कुमाऊँ शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में विशेष प्रगति कर सकने में असमर्थ रहा। प्राचीन समय में यहाँ के लोग लोक संगीत, कीर्तन, रामलीला, खड़ी होली और बैठकी होली को ही संगीत समझा करते थे। विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण शास्त्रीय संगीत के गुणीजनों का पदार्पण इस क्षेत्र में स्थायी रूप से न हो पाना इसका मुख्य कारण रहा। कालांतर में आवागमन के साधनों के स्थापित होने पर कुमाऊँ के इस क्षेत्र को शास्त्रीय संगीत के गुणीजनों के संपर्क में आने का सुअवसर धीरे-धीरे प्राप्त होने लगा। इस अति दुर्गम क्षेत्र के जनमानस को मात्र रेडियो के माध्यम से अवश्य शास्त्रीय संगीत सुनने का अवसर मिला करता था। श्रेष्ठ गुरुजनों के अभाव में यहाँ प्रारंभ में शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार नहीं के बराबर रहा।

कुमाऊँ में शास्त्रीय संगीत की वर्तमान स्थिति – कुमाऊँ में शास्त्रीय संगीत की वर्तमान स्थिति नए आयामों की ओर अग्रसर हो रही है। शास्त्रीय संगीत के प्रति युवा पीढ़ी का रुझान बढ़ रहा है। समाज में शास्त्रीय संगीत की सूक्ष्मता के प्रति जागरूकता अनवरत बढ़ती चली जा रही है। कुमाऊँ की बैठकी होली शास्त्रीय रागों पर आधारित एक अनूठी संगीत परम्परा है। कुमाऊँनी रामलीला में भी शास्त्रीय संगीत के रागों पर आधारित धुनों का प्रचलन विद्यमान है। कुमाऊँ में गाये जाने वाले लोकगीत प्रायः राग दुर्गा तथा राग पहाड़ी पर आधारित धुनों से गहरा सम्बन्ध रखते हैं। यह सभी तथ्य इस ओर संकेत करते हैं कि किसी न किसी रूप में शास्त्रीय संगीत की सहभागिता इस क्षेत्र में प्राचीन समय से विद्यमान रही है। पिछले कुछ दशकों से शास्त्रीय संगीत की गायन, वादन तथा नृत्य की सभी विधाएं अपने वास्तविक स्वरूप में कुमाऊँ के सभी जनपदों में उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर हुई हैं। इस क्रांतिकारी परिवर्तन का श्रेय मुख्य रूप से पिछले कुछ दशकों में यहाँ से अन्यत्र (वाराणसी, लखनऊ, दिल्ली, इलाहाबाद, हैदराबाद आदि स्थानों पर) जाकर तथा वहाँ से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्रहण कर आये गुणीजनों को जाता है। इन गुणीजनों ने शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार को अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रचार की दिशा में उल्लेखनीय सहयोग प्रदान किया।

कुमाऊँ में शास्त्रीय तबला वादन – यह शोध पत्र पाठकों के समक्ष उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र में शास्त्रीय तबला वादन की पूर्व एवं वर्तमान स्थितियों को समझने में सहायक सिद्ध होगा। वर्तमान समय में शास्त्रीय तबला वादन की ओर युवा पीढ़ी का रुझान बढ़ता चला जा रहा है। उच्च शिक्षण संस्थानों में कार्यरत जिन गुरुजनों ने शास्त्रीय तबला वादन का बीजारोपण किया, उसके परिणाम वर्तमान समय में पुष्पित और पल्लवित होने लगे हैं। एक कालखंड था जब कुमाऊँ के इस दुर्गम क्षेत्र में क्षेत्रवासी तबला वादन की बारीकियों से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ थे। हाथ का रखरखाव, बोलों की निकासी, एकल वादन जैसे तथ्यों से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ समाज में वर्तमान समय में स्तरीय तबला वादन हो रहा है। इस कालक्रम के इतिहास को लिखित रूप में स्थान अवश्य प्राप्त होना चाहिये। कुमाऊँ में शास्त्रीय तबला वादन का इतिहास लोक संगीत की समृद्ध परम्परा से भी प्रभावित रहा है। कुमाऊँ में मुख्य रूप से लोकगीतों के साथ ढोल, दमाऊ और हुड़का आदि लोक वाद्य यंत्रों का प्रयोग हुआ करता था। प्रारंभ में लोकगीतों के साथ ढोलक का बहुतायत से प्रयोग हुआ करता था। प्रारंभ में कुमाऊँनी बैठकी होली तथा कुमाऊँनी रामलीला के साथ भी ढोलक की संगत प्रचलन में थी क्योंकि तबला वादक उपलब्ध नहीं थे। प्रारंभिक दौर में तबले का प्रयोग ढोलक वादन की शैली में प्रारंभ हुआ। कुमाऊँ विश्वविद्यालय में संगीत विभाग में तबला वादन विषय को स्थान मिलने के उपरान्त शास्त्रीय तबला वादन के क्षेत्र में नई क्रांति आयी।

सर्वप्रथम डॉ. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव कुमाऊँ विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में तबला विषय में नियुक्त हुए। लगभग अपने छह वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने अनेक शिष्य तैयार किये। तबला वादन की वास्तविक शिक्षा कुमाऊँ में विकसित होने लगी। डॉ. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव के पश्चात् डॉ. विजयकृष्ण सन् 1980 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में तबला विषय में नियुक्त हुए। डॉ. विजयकृष्ण ने अपना सम्पूर्ण सेवाकाल कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल में रहकर सम्पूर्ण कुमाऊँ में शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में सर्वाधिक उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया। उनके शिष्य कुमाऊँ के प्रायः सभी जनपदों में फैले हुए हैं और शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहे हैं। बनारस घराने के डॉ. मनोज मिश्रा भी कुमाऊँ विश्वविद्यालय के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत में संगीत विभाग में अपनी सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं। कुमाऊँ में तबला वादन की शास्त्रीय परम्परा के प्रचार-प्रसार में आपका भी अविस्मरणीय योगदान रहा है। डॉ. मनोज मिश्रा जून 1994 से जुलाई 2001 तक कुमाऊँ मंडल में उच्च शिक्षा (संगीत विषय) में कार्यरत रहे। आपने शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में अविस्मरणीय योगदान प्रदान किया। उच्च शिक्षा में कार्यरत इन तीन विभूतियों ने शास्त्रीय तबला वादन को कुमाऊँ में नया आयाम प्रदान किया। आज कुमाऊँ में जितना भी परिमार्जित तबला वादन हो रहा है उसका श्रेय मुख्य रूप से इन तीन गुणीजनों को ही जाता है। डॉ. विजयकृष्ण एक दीर्घ समयान्तराल (लगभग 30 वर्ष) तक कुमाऊँ विश्वविद्यालय में कार्यरत रहे और उन्होंने कुमाऊँ को ही अपनी कर्मस्थली बना लिया।

शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में डॉ. विजयकृष्ण की भूमिका – उत्तराखंड का कुमाऊँ क्षेत्र जटिल भौगोलिक परिस्थितियों वाला भूभाग है। यहाँ आकर दुरूह परिस्थितियों में रहकर जीवन निर्वहन करना किसी त्याग एवं समर्पण से कम नहीं है। जिन विभूतियों ने इन दुर्गम परिस्थितियों में रहकर अपनी सेवाएँ प्रदान कीं उनका उल्लेख अवश्य होना चाहिए। डॉ. विजयकृष्ण ने कुमाऊँ के इस दुर्गम क्षेत्र में अपनी सेवाएँ देकर शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में अविस्मरणीय भूमिका निभाई है। कुमाऊँ में शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाले गुरुजनों का उल्लेख लिखित रूप में प्रायः बहुत कम उपलब्ध है। यह शोध पत्र इस दिशा में अग्रसर होने का एक प्रयास है। कुमाऊँ मात्र लोक संगीत तथा लोक विधाओं तक सीमित था। शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञों ने लोक संगीत तथा लोक विधाओं को भी नया आयाम प्रदान किया। डॉ. विजयकृष्ण का शोध प्रबंध 'A Rythmic Analysis of Garhwali Folk Music' इस तथ्य का एक ठोस प्रमाण है।

आचार्य श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तक ताल परिचय भाग तीन में उस्ताद शेख दाऊद का जीवन परिचय विद्यमान है। उनके जीवन परिचय के कुछ अंश पुस्तक में इस प्रकार वर्णित हैं "उस्ताद शेख दाऊद विद्यादान में बहुत उदार थे। आपके उल्लेखनीय शिष्यों में आपके पुत्र शब्बीर निसार और शिष्यों में किरण देशपांडे (भोपाल), विजयकृष्ण (कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल), नन्द कुमार (हैदराबाद), गौतम कोडाइकिल (बैंगलोर), लक्ष्मैया तथा हैदराबाद के नवाब जहीर यारजंग मुख्य हैं।" (श्रीवास्तव 191)

पुस्तक में वर्णित यह अंश डॉ. विजयकृष्ण के उस्ताद शेख दाऊद के योग्य शिष्यों में से एक होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। अतः स्पष्ट है कि उत्तराखंड के कुमाऊँ मंडल में उस्ताद शेख दाऊद की तबला वादन परम्परा के संवाहक डॉ. विजयकृष्ण रहे।

वीणा महाराज संगीत समिति तपोवन, ऋषिकेश, उत्तराखंड की नादसुधा स्मारिका 2009 में 'साम्प्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकता में संगीत का योगदान' नामक लेख डॉ. विजयकृष्ण की उच्च स्तरीय सोच का परिचायक है। डॉ. विजयकृष्ण लिखते हैं–"जाति एवं धर्म संगीत शिक्षा के आदान-प्रदान में बाधक नहीं रहे। हिन्दू, मुसलमान, सिख एवं ईसाई अपनी रूचि के किसी भी धर्म के गुरु के पास शिक्षा लेने लगे। उस्ताद अल्लाउद्दीन के पास अधिकतर हिन्दू शिष्यों ने ही संगीत कला की साधना की, जिसमें पंडित रवि शंकर, पंडित पन्नालाल घोष एवं पंडित वी.जी जोग ने विशेष ख्याति प्राप्त की। उस्ताद विलायत खाँ के भी प्रथम शिष्य श्री अरविन्द पारिख हुए। उस्ताद अमीर खाँ के शिष्यों में पंडित अमरनाथ एवं सिख धर्म के सिंह बंधुओं के नाम उल्लेखनीय हैं। उस्ताद अहमदजान थिरकवा के प्रमुख शिष्यों में पंडित प्रेम वल्लभ का नाम लिया जाता है। मुझे (लेखक को) स्वयं दो मुस्लिम उस्तादों–उस्ताद अजीजुद्दीन खाँ एवं उस्ताद शेख दाऊद से तबले की विद्या प्राप्त हुई। उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ का गाया–"हरि ओम् तत्सत्" बहुत प्रसिद्ध हुआ। इन उदाहरणों से वर्तमान युग में भी संगीत कला का धर्मनिरपेक्ष होना प्रमाणित होता है।" (नादसुधा 7)

डॉ. विजयकृष्ण की कथनी एवं करनी में कभी अंतर नहीं रहा। सम्पूर्ण कुमाऊँ मंडल में यह चर्चित है कि उन्होंने स्वयं भी साम्प्रदायिक सद्भाव की विचारधारा का अनुपालन किया और बिना किसी भेदभाव के समाज में संगीत के उत्थान हेतु समर्पण के साथ कार्य किया।

सन् 1980 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल के संगीत विभाग में डॉ. विजयकृष्ण का आगमन कुमाऊँ क्षेत्र के लिए अत्यधिक लाभप्रद सिद्ध हुआ। मात्र शिक्षण कार्य तक सीमित न रहकर डॉ. विजयकृष्ण ने शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में अविस्मरणीय योगदान प्रदान किया। कुमाऊँ के प्रसिद्ध तबला वादक, संतोष लाल साह के अनुसार–"डॉ. विजयकृष्ण नैनीताल में आने के पश्चात् शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में तन, मन, धन से जुट गए। शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में पूर्व से जुटी संस्थाओं हरिकीर्तन सभा नैनीताल तथा शारदा संघ नैनीताल को डॉ. विजयकृष्ण का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ और शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार को नई दिशा मिली। शास्त्रीय संगीत के राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को नैनीताल में आमंत्रित कर स्तरीय आयोजन डॉ. विजयकृष्ण के सहयोग से प्रारंभ होने लगे। गोवर्धन हॉल, शारदा संघ, नगर पालिका सभागार नैनीताल में क्रमशः नियमित शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम आयोजित होने लगे। सम्पूर्ण कुमाऊँ के कलाकारों को एक मंच पर लाने का श्रेय डॉ. विजयकृष्ण को जाता है। नाट्य संस्था युगमंच के कार्यक्रमों में भी आपकी पूर्ण सहभागिता रही।" (संतोष लाल साह)

डॉ. विजयकृष्ण के आकाशवाणी दिल्ली व दिल्ली दूरदर्शन से कई कार्यक्रम प्रसारित होते रहे हैं। आपने देश के कई प्रमुख शहरों में तबला एकल वादन एवं कुशल तबला संगत के कार्यक्रमों में संगतकर्ता के रूप में प्रस्तुति देकर पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। राष्ट्रीय स्तर के अनेक कलाकारों यथा एल.के.पंडित (गायन), बलदेव वर्मा (गायन), शाहिद परवेज (सितार), ओम प्रकाश चौरसिया (संतूर), सरदार अजीत सिंह (विचित्र वीणा), डॉ. कृष्णा बिष्ट (गायन) आदि के साथ आपकी कुशल संगत बहुचर्चित रही है। निश्चित रूप से आपके सांगीतिक अनुभवों से कुमाऊँ मंडल लाभान्वित रहा है। आपने सदैव सम्पूर्ण उदारता के साथ कुमाऊँ मंडल में शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों द्वारा नई अलख जगाने का कार्य किया। Spic Macay के कार्यक्रमों को कुमाऊँ मंडल में आयोजित करने का श्रेय भी आपको जाता है।

हल्द्वानी के मुखानी निवासी संगीत प्रेमी एवं बैठकी होली गायक राजेन्द्र कोठारी के सौजन्य से प्राप्त डॉ. दीपा जोशी द्वारा लिखित पुस्तक 'संगीत कौस्तुभ' के अनुसार– "संगीत के सैद्धांतिक पक्षों के प्रति सदैव सजग विजयकृष्ण जी ने शास्त्रीय संगीत के अनेक गूढ़ विषयों पर बराबर लेखनी चलाई है। आपके शोधपत्र संगीत पत्रिका हाथरस, संगीत कला विहार मिरज, निनाद, आई.टी.सी. कलकत्ता, संगीत नाटक अकादमी व पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला की पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। एक चिन्तक विचारक के रूप में आपने इण्डियन म्यूजिकोलोजी सोसाइटी मुंबई, आई.टी.सी. मुंबई, विश्व वेद सम्मेलन गुरुकुल कांगड़ी

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठियों में अपने विचार व्यक्त किये। तबला वादन के क्षेत्र में प्रद्दत योगदान के लिए आपको संकल्प हल्द्वानी द्वारा पंडित चंद्रशेखर अवार्ड व श्री रामसेवक सभा द्वारा विशिष्ट संगीत सेवा सम्मान से नवाजा गया था। वर्तमान में आप नैनीताल की सुरम्य प्राकृतिक वादियों के बीच रहकर विभिन्न माध्यमों से शास्त्रीय संगीत की सेवा में संलग्न हैं।" (जोशी 88)

संगीत नाटक अकादमी दिल्ली द्वारा उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ अवार्ड प्राप्त नैनीताल के प्रसिद्ध रंगकर्मी ज़हूर आलम के अनुसार–"डॉ. विजयकृष्ण मात्र कुमाऊँ विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य तक सीमित नहीं रहे। आपने समाज में संगीत के माध्यम से सौहार्द एवं सद्भाव के जागरण का कार्य किया। नैनीताल में सम्पूर्ण कुमाऊँ मंडल के होली के कलाकारों को एक मंच में लाकर 'होली महोत्सव' प्रारंभ करवाने में आपकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। संगीत की प्रतिभा से संपन्न युवाओं को आपने प्रेरित कर समाज को नई सोच प्रदान की।" (ज़हूर आलम)

उत्तराखंड के हल्द्वानी में शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में अनवरत संलग्न रहे एक आदर्श गुरु डॉ. चंद्रशेखर तिवारी जिनकी उम्र वर्तमान में लगभग 80 वर्ष है के अनुसार–"डॉ. विजयकृष्ण अत्यंत सरल प्रकृति के विलक्षण प्रतिभा संपन्न कलाकार हैं। कुमाऊँ मंडल में उनका आगमन वरदान सिद्ध हुआ। उनके अनेकों शिष्य वर्तमान समय में तबला वादन के क्षेत्र में उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं। हल्द्वानी में आयोजित संगीत संध्याओं में डॉ. कृष्णा बिष्ट एवं एल.के.पंडित जी के साथ उनकी तबला संगत की याद आज भी उन्हें रोमांचित करती है।"

वर्तमान समय में उत्तराखंड के गढ़वाल मंडल में संगीत शिक्षक के रूप में कार्यरत डॉ. हिमांशु जोशी, जो डॉ. विजयकृष्ण के प्रमुख शिष्यों में से एक रहे हैं के अनुसार–"दस वर्ष की आयु में तबला वादन की शुरुआत करने के साथ ही मैं डॉ. विजयकृष्ण जी के नाम से परिचित हो गया था। प्रशिक्षण के आगे बढ़ने के साथ ही मुझे आपकी विद्वता का अधिकाधिक भान हुआ। मुझे यह भी अनुभव हुआ कि आज की पीढ़ी में उत्तराखंड के अधिकतर शास्त्रीय तबला वादक आपसे ही प्रशिक्षण प्राप्त किये हुए हैं। मेरा सौभाग्य है कि मुझे भी डॉ. विजयकृष्ण जी का सानिध्य कई वर्षों तक प्राप्त हुआ है। इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि उत्तराखंड में शास्त्रीय संगीत एवं खासकर तबला वादन के प्रचार एवं प्रसार में आपने श्रेष्ठतम भूमिका निभाई है।" (डॉ. हिमांशु जोशी)

निष्कर्ष

किसी भी स्थान विशेष का अपना इतिहास होता है। दुर्गम क्षेत्रों में विकास की गति बहुत धीमी होती है। पर्याप्त संसाधनों के अभाव में जीवन संघर्षपूर्ण और अभावग्रस्त होता है। प्रायः किसी भी क्षेत्र में विकास दीर्घ समयान्तराल के पश्चात ही अस्तित्व में आ पाता है। उत्तराखंड का कुमाऊँ क्षेत्र चिकित्सा एवं शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी अत्यंत पिछड़ा हुआ है। शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में वर्तमान समय में भी उत्तराखंड का कुमाऊँ क्षेत्र लगभग पिछड़ा ही कहा जायेगा। मात्र कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल में ही तबला एक विषय के रूप में उपलब्ध है। अन्य वाद्य यंत्रों का प्रचार-प्रसार भी नहीं के बराबर है। मात्र गायन की कक्षाएं कुछ अन्य महाविद्यालयों में संचालित हो रही हैं। शास्त्रीय संगीत जैसा महत्त्वपूर्ण विषय जो समाज में प्रेम और सौहार्द की आधारशिला है, व्यक्ति के आध्यात्मिक उन्नयन का आधार है, कुमाऊँ के इस दुर्गम क्षेत्र में अभी भी शैशवावस्था में है। इस दुर्गम क्षेत्र में रहकर सेवाएँ प्रदान करने वाले और इस दुर्गम क्षेत्र को अपनी कर्मस्थली बनाने वाले व्यक्तित्व अवश्यमेव अनुकरणीय हैं। इस दुर्गम क्षेत्र के लोगों को प्रगति पथ पर आगे बढ़ाने वाले व्यक्तित्वों का उल्लेख अनिवार्य है। प्रस्तुत शोध पत्र इस दिशा में एक कदम मात्र है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. रौतेला, नेत्र सिंह, म्यर कुमाऊँ की एक झलक, शिखरदीप प्रकाशन, 310, मैग्नम हाउस – 1, करमपुरा कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली– 110015, प्रथम संस्करण 2003, पृ. 13
2. श्रीवास्तव, गिरीश चन्द्र, ताल परिचय, भाग तीन, रूबी प्रकाशन, बी 629 गुरु तेग बहादुर नगर, इलाहाबाद 211016, पृ. 191
3. नादसुधा, वीणा महाराज संगीत संस्थान, शिखर होटल के सामने, तपोवन, ऋषिकेश, मुनि की रेती, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड, वर्ष 2009, पृ. 7
4. साक्षात्कार : संतोष लाल साह (तबला वादक), पितरौटा, पिथौरागढ़, तिथि 28-05-2025, 20:30
5. जोशी, डॉ. दीपा, संगीत कौस्तुभ, मोहन उप्रेती लोक संस्कृति, कला एवं विज्ञान शोध समिति, 146 – नंदादेवी, तल्ला दन्या, अल्मोड़ा – 263601, उत्तराखंड, पृ. 88
6. साक्षात्कार : ज़हूर आलम (सुप्रसिद्ध रंगकर्मी), युगमंच, मल्लीताल नैनीताल, तिथि 09-09-2024, 18:24
7. साक्षात्कार : डॉ. चंद्रशेखर तिवारी (सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ एवं सरोद वादक), जे.के.पुरम, हल्द्वानी, तिथि 05-10-2025, 18:40
8. साक्षात्कार : डॉ. हिमांशु जोशी (संगीत शिक्षक) एवं कुशल तबला वादक, हल्द्वानी, तिथि 07-10-2025, 13:13